SOCIOLOGY

B.A. I Honours
Paper I
M.A. Joha.

SOCIAL SYSTEM

सामाजिक व्यवस्था

समाजशास्त्र में जिन अवधारणाओं का विशेष रूप से अध्ययन किया जाता है, सामाजिक व्यवस्था उनमें से एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। सामान्य रूप से यह कहा जा सकता है कि व्यवस्था का तात्पर्य एक संरचना के अन्तर्गत कुछ तत्वों का इस प्रकार सम्बद्ध रहना है जिससे वह कार्यात्मक रूप से एक दूसरे को क्रियाशील बनाये रखें।

व्यवस्था का सम्बन्ध संरचना से होता है जिसका निर्माण एक से एकाइयों द्वारा किया जाता है जिनमें एक निश्चित क्रम पाया जाता है। इसका निर्माण करने वाली अनेक इकाइयाँ एक दूसरे से इस प्रकार जुड़ी हुई होती हैं जो कार्यात्मक रूप से हमारे लिये हमारे लिये महत्वपूर्ण हों। व्यवस्था एक ऐसी स्थिति का बोध कराती है जिसमें विभिन्न तत्व अनेकता से एकता में परिवर्तित हो जायें। व्यवस्था में परिवर्तनशीलता के गुण भी पाये जाते हैं।

जहाँ तक सामाजिक व्यवस्था का सम्बन्ध है का सम्बन्ध है यह विचार किया जा सकता है कि सामाजिक व्यवस्था वह स्थिति है जिसमें समाज का निर्माण करने वाले विभिन्न तत्व एक सांस्कृतिक व्यवस्था के अन्तर्गत कार्यात्मक रूप से एक दूसरे से सम्बद्ध रहते हैं तथा एक ऐसे संतुलन का निर्माण करते हैं जिसमें विभिन्न संस्थायें अपने उद्देश्यों के अनुसार कार्य करके व्यक्तियों की अन्तःक्रियाओं को नियमित कर सकें। इसका अर्थ यह है कि सामाजिक व्यवस्था को एक ऐसी स्थिति कहा जा सकता है जिसके द्वारा समाज के सहयोगी और विरोधी शक्तियों के बीच एक संतुलन

Scanned by CamScanner

स्थापित कर दिया गया है। इस सन्तुलन को निर्माण उस समाज की सांस्कृतिक विशेषताओं को दृष्टि में रखते हुए किया जाता है। यही कारण है कि सामाजिक व्यवस्था की अवधारणा को सांस्कृतिक व्यवस्था से अलग कर स्पष्ट नहीं किया जा सकता है।

M. E. Jones के अनुसार, "सामाजिक व्यवस्था वह स्थिति है जिसके अन्तर्गत समाज के विभिन्न कार्यशील अंग एक दूसरे से तथा सम्पूर्ण समाज के साथ अर्थपूर्ण ढंग से सम्बद्ध कार्य करते हैं।" उनके इस कथन से स्पष्ट है कि सामाजिक व्यवस्था का अर्थ समाज में केवल सहयोगी तत्वों का विद्यमान होना नहीं है। समाज में सहयोगी और विरोधी दोनों ही प्रकार के तत्व मौजूद रहते हैं, लेकिन सामाजिक व्यवस्था का तात्पर्य ऐसी स्थिति से है जिसमें प्रत्येक अंग को एक दूसरे से Interaction करने और अपनी सामाजिक जरूरतों को पूरा करने के अधिकतम अवसर प्राप्त हो सकें। इसी आधार पर Parsons ने सामाजिक व्यवस्था की विवेचना में संस्थाओं के महत्व पर विशेष बल दिया है। इसकी अवधारणा को समझने के लिये Parsons के विचारों का बहुत अधिक महत्व है। Parsons के अनुसार,

"एक सामाजिक ~~[illegible]~~ परिस्थिति में जब अनेक व्यक्ति कर्ता सामान्य रूप से स्वीकृत सांस्कृतिक प्रतीकों की व्यवस्था के अन्तर्गत अपने आदर्श लक्ष्यों की प्राप्ति के

Scanned by CamScanner

लिये अन्तर्क्रिया कर रहे होते हैं तब इसी स्थिति को हम सामाजिक व्यवस्था कहते हैं। उसने यह विचार भी दिया के केवल उसी स्थिति को सामाजिक व्यवस्था कहा जाता है जिसमें इन तत्वों का समावेश हो।

(1). अनेक व्यक्तिक कर्ता

(2) कर्ताओं के बीच अन्तर्क्रियाएं

(3) अन्तर्क्रियाओं का एक आदर्श लक्ष्य

(4) सामाजिक प्रास्थिति

(5) सांस्कृतिक नियमन

—x—

Scanned by CamScanner